महागायत्री-महिमा

कश्मीर-महिमा

पृथिव्यां रत्नसूः श्लाध्या तस्या धनपतेर्हरित्
तत्र गौरीगुरुः शैलः तस्मिन् काश्मीर-मंडलम् "कल्हण"

हिमालय की गोद में बसा यह क्षेत्र कश्मीर ऋषियों की भूमि रहा है। यहां वेदमंत्रों का साक्षात्कार ऋषिवरों ने प्राप्त किया है। यह क्षेत्र वेदवर्णित वितस्ता नदी के तट पर बसा है। कश्मीरवासी जनों के पूर्वज गन्धर्व कहलाते है। वे सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे। **"सरस्वति, प्रेदं अव सुभगे वाजिनीवति यां त्वां विश्वस्य भूतस्य पृथगायामि अग्रतः"**—'वेद'। वे ही हिमाचल स्थित सरस्वती क्षेत्र से आगे बढकर जम्मू तथा डोडा से आगे पहलगाम घाटी में आबाद हुये। कश्यप ऋषि ने कनखल (हरिद्वार) से गढ़वाल के पहाड़ी रास्ते से चलकर घाटी में प्रवेश किया और तपस्या के बल से आशीर्वाद प्राप्तकर सतीसर का जल नीचे बहाया। यह घटना आज से 18 हजार वर्ष पूर्व घटी है। यह वैज्ञानिकों का मानना है। इन्ही कश्यप की प्रजा को कश्मीरी-प्रजा या भट्ट, या पंडित या सारस्वत ब्राहमण या कश्मीरी हिन्दू कहा जाता है।

कश्मीर आगे देश के विशिष्ट तथा प्रमुख विद्या-प्रसार-केन्द्रों में गिना जाने लगा। देश-विदेशों से यहां प्रशिक्षार्थी आते थे। विश्व विख्यात ज्ञानियों ने कश्मीर में ज्ञान प्राप्त किया है। इस हेतु कश्मीर का नाम शारदा देश भी पडा। आज भी काशी के ब्राह्मणजन गायत्रीदीक्षा के असवर पर बालकों को कहते है-**'कश्मीरान् गच्छ'** यानी कश्मीर पढ़ने जाओ।

''नमोऽस्तु शारदे देवि कश्मीरपुर वासिनि''
त्वां अहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं चदेहिमे (सरस्वती वन्दना)

इसी शिक्षा प्राप्ति का वेदोक्त क्रम **यज्ञोपवीत** संस्कार है। कश्मीरियों में यज्ञ के प्रति अदभुत श्रद्धा दिन-प्रति दिन बढ़ती जा रही है।

गायत्री-संस्कार

स्वामी विवेकानन्दजी ने कहा है कि हिन्दु समाज को तीन बातें ध्यान में रखंनी चाहियेः-

(1) **श्रद्धा** (2) **ब्रह्मचर्य** (3) **वेद और वेदान्त का अध्ययन।**

गायत्री संस्कार इन्हीं तीन बातों की शिक्षा का विधिवत् प्रारम्भ है। इस संस्कार के लिये कई शब्द प्रचलित है।

(क) **यज्ञोपवीत संस्कार** यानी पर-ब्रह्म के अस्तित्व पर अडिग आस्था या श्रद्धा।

(ख) **मेखला संस्कार** यानी ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा।

(ग) **उपनयन संस्कार** यानी वेदाध्ययन के लिये गुरु चरणों में बालक की उपस्थिति।

ब्रह्म सूत्र या गायत्री धारण करना इसका प्रमुख लक्षण है। यह संस्कार सोलह वैदिक संस्कारों में महत्त्वपूर्ण गिना जाता है।

संस्कार का अर्थ

माता-पिता, गुरुजनों एवं समाज के स्वस्थ वातावरण में शुद्ध और सुन्दर पर्यावरण में पलकर बालक को शुद्ध व सात्त्विक आचार विचार के अनुकूल जीवन जीने की प्रेरणा तथा चेतना मिल जाय। यह सदाचार बालकों को और बालिकाओं को अच्छा मानव बनाता है। इस संस्कार का श्रीगणेश वेदमंत्रो के द्वारा यज्ञ-कुंड में आहुति डालकर होता है। सारे वातावरण को शान्तिमय बनाने के लिये देवगणों से शान्ति की प्रार्थना की जाती है।

इस **ब्रह्मसूत्र** अथवा **यज्ञोपवीत** की रक्षा के लिये लाखों वैदिकजनों ने बलिदान दिये है और इसका पहनना जारी रखा है। इन बलिदानी महापुरुषों में **गुरुतेगबहादुरजी** का नाम संस्मरणीय है जिन्होंने कश्मीरी पंडितों के यज्ञोपवीत तथा तिलक की रक्षा के लिये हिन्दुधर्म की रक्षा के लिये आत्मबलिदान दिया! इसी बात का उल्लेख पिता दशमेश गुरुगोविन्द सिंह ने इन शब्दों में किया है-**''तिलक जनेउ राखा प्रभु ताग़ा''**—''विचित्र नाटक''।

यज्ञोपवीत धारण करके वैदिकयज्ञ में बैठने का अधिकार प्राप्त होता है।

वैदिक संस्कृति और गायत्री

चार वेदों में वर्णित वैदिक संस्कृति मनुष्य में देवत्व जागृत करती है। गायत्री मंत्र के दृष्टा ऋषि विश्वामित्र हुये है। वे वेदमूर्ति तपोनिष्ठ ऋषिप्रवर थे। यह मंत्र ज्ञान और विज्ञान दोनों का प्रदाता है। इस मंत्र के जाप से व्यक्ति की मेधा का परिष्कार होता है। इस मंत्र के सस्वर पाठ के साथ आहुतियां अग्निदेव को दी जाती है।

16 संस्कारों में प्रारंभिक यह संस्कार है:-

1. **गर्भाधान** – यानी पति–पत्नी का सच्चरित्र संतति को जन्म देने का सुसंकल्प 2. **जातकर्म** - जन्मे हुये बच्चे के निमित्त प्रभु के प्रति कृतज्ञता। 3. **नामकरण** - शास्त्रों में दिये संस्कृत नामों को अपनी रुचि के अनुरूप चुनकर बच्चे का नाम रखना। 4. **अन्नप्राशन** – यानी माता के दूध के अलावा अन्नादि के द्वारा बच्चे का पालन। 5. **विद्यारंभ** - यानी शिक्षा प्रारंभ करना। 6. **मुंडन** या शिखा स्थापना।

विदेशी आक्रमण के दौर से पहले ये संस्कार अपने-अपने समय पर क्रम से होते थे किन्तु आजकल इसी गायत्री संस्कार के अवसर पर एक साथ संपन्न किये जाते है। कारण – **'न भट्टोऽहं'** दौर का बिखराव और पुनर्वास है।

गायत्री मंत्र व्यक्ति तथा राष्ट्र के नव–निर्माण के लिये सहायक है। यह आशावाद का संचार करता है। निराशा को दूर भगाता है। जीने की इच्छा पैदा करता है। इस महामंत्र के जाप से व्यक्ति की दिव्यमेधा में तीव्रता तथा प्रवरता आती है। मनुष्य को सही दिशा में काम करने की प्रेरणा मिलती है। ईश्वरीय तत्व का बोध होता है तथा ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त होता है। महिलाओं को भी गायत्री जाप का अधिकार है।

कुछेक परिभाषाओं का अभिप्राय:-

अभेद:- कश्मीरी पंडितों में क्रम प्रचलित है कि ब्रह्मसूत्र धारण करने के अवसर पर बालक को भेंट दी जाती है जो रुपय्यों के रूप में होती है। बालक भेंट प्राप्तकर संबन्धी दाता को 'अभेद' शब्द कहकर समादर करता है। इसका अर्थ है आप महोदय हमारे अपने है। आप और हम एक ही हैं। हम एक ही वैदिक समाज के अंग है। यह धन वास्तव में वैदिक शिक्षा की पुष्टि के लिये एतत् संबन्धी संस्थानों को चलाने के लिये ब्रह्मचारी घर-घर जा कर भिक्षा के रूप में प्राप्त करते थे। आजकी भाषा में इसे (voluntary offerings) कहा जा सकता है। इसका उपयोग संस्कृत-प्रचार में ही हो।

आज्यदर्शन – प्राचीन काल में सभी वैदिक जनों के आर्थिक दान तथा वस्तुदान से यज्ञ रचाये जाते थे तो यह उसी का अवशिष्ट प्रतीक है। It is a symbolic act of indidual contribution, participation and self offering for the yajna यज्ञ में डालने के लिये पिघले हुये घृत के पात्र में अपनी छाया देखना यही छाया रूप आकार स्वाहा सुनकर अग्निदेव को अर्पण होता है।

आवश्यक सामग्री

वासोऽहतं ब्रहमसूत्रं अश्मानं दधि मेखला

(1) ब्रह्मचारी के लिये बिना सिलाई किये दो वस्त्र यानी **अधोवस्त्र** धोती तथा **उर्ध्ववस्त्र** या अंगवस्त्र या कंधे का वस्त्र।
(2) ब्रहमसूत्र-शुद्ध धागे से बनाया हुआ जनेउ।
(3) नदी तल से लाया शुद्ध तथा ठोस गोल- पत्थर जो दृढता तथा स्थिरता का प्रतीक है। यह वास्तव में पाषण कुर्सी है।
(4) दही-यानी पावनता तथा सात्विकता का देने वाला पेय।
(5) मेखला यानी ओटपन (कमर बन्ध) तथा कच्छा, या स्नानपट।
(6) बालक के लिये दैनिक गायत्री जाप के लिये आसन पट (ब्रहमचारी के वस्त्र और आसन पट दान देने की प्रथा अनावश्यक है)। यह आसन पट विद्यार्थी प्रयोग में लाये।
(7) समिधायें-यानी छोटी-2 सूखी लकडियां जो अग्नि शिखा को प्रज्वलित रखने के लिये आवश्यक है।
(8) ओंकार पट यानी सूर्यमंडल के मध्य अंकित ॐ बैनर यहां मंडप में टांगकर रखना।
(9) गायत्रीपट-गायत्रीमंत्र को कपडें पर लिखकर ब्रहमचारी के ह्रदय को पावन बनाने के लिये उसके सामने पूर्व में टांगना।

गायत्री मंत्र का अर्थः-

ॐ भू भुर्वः स्वः तत् सवितु र्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्॥

इसी महामंत्र की दीक्षा ज्ञानवान् तपोनिष्ठ महापुरुष के द्वारा बालक को देने का नाम गुरुदीक्षा है।

शब्दशः अर्थ -

ॐ - परमप्रभु का एक मात्र नाम। गीता कहती है - ॐ इति एकाक्षरं ब्रह्म। यही एक अक्षर ब्रह्म है। संध्या में लिखा है- दैवं अक्षरं ॐ इति। प्रभु का एक मात्र नाम ॐ है।

भूर - पृथ्वी लोक जिस पर चर, अचर, पशु, पक्षी, एवं मानवादि का जीवन स्थित है।

भुवः - मध्यलोक या अन्तरिक्ष लोक जो सूर्यलोक तथा पृथ्वी लोक के मध्य शून्य रूप में विराजमान् है।

स्वः - प्रकाशमान सूर्यलोक जिसे स्वर्गलोक विष्णुधाम, सर्वोत्कृष्टधाम भी कहा जाता है।

भर्गः - प्रकाशमान, तेजोरूप, उज्जवल, अन्धकार हरण करने वाला, ज्ञानदाता, सुवर्ण रश्यियों से सुशोभित, प्रत्यक्षदेव, हिरण्यगर्म, अनन्त शक्तिशाली प्रभु जिसका परिमाण तथा प्रमाण स्वयं भगवान् भास्कर है।

तत् सवितुः (सविता) - उस समग्र सृष्टि के जन्मदाता, चराचर के मालिक परमेश्वर जिसने सब प्रकार की रचना की है को इसी लिये सविता यानी सृष्टि रचना करने वाला कहते हैं। वह अनिर्वचनीय है। सब आकार-प्रकार का स्वामी है। उसके उदित होते ही यह सारा संसार निद्रा त्यागकर पुनः जन्म लेता है, सजीव होता है।

वरेण्यम् - वह वरणीय है। उस प्रभु को ही हम सबसे अधिक प्यार करें, अपनाये, आराधना करें, वह सबसे श्रेष्ठ, सुन्दरतम व मनोहर है। उसे हृदय में धारण करें, उसकी भक्ति करें उसको वरण करें।

देवस्य -जो कुछ भी हमारे पास है उसका प्रदाता वही एक प्रभु है। उसके दिये से ही जीवन सुरक्षित है, हमारा कुछ भी नही जो कुछ है उसी दाता का है। जो कुछ है बस तोर।

धीमहि - हम ऐसे प्रभु का ध्यान करें, उसे अपने हृदय में विराजमान करें, उसका चिन्तन हम किसी क्षण न भूले। वह हमारी हर सांस और हर आस में व्याप्त हो।

धियः - बुद्धि को, मेधा को, ज्ञान-विज्ञान की शक्ति को सूक्ष्म-तत्व को जानने की शक्ति को भौतिक तथा अभौतिक से परे विद्यमान प्रभु को जानने की परखने की शक्ति को।

यो नः - वही प्रभु इस बुद्धि को।

प्रचोदयात् - आत्म साक्षात्कार के लिये प्रेरित करे। हमें सन्मार्ग पर चलने की संकल्प शक्ति दे। हमें अमृत पान करने की, अमरता प्राप्ति की प्रेरणा दे।

संस्कार के लिये सामग्री

जौ दाने ताकि पूर्णाहुति में सभी बान्धव अपना-अपना भाग अर्पण कर सके।

चावल, पुष्प, सिन्दूर, मौली, तिल अखरोट।

शान्ति पाठ की एक-एक पोथी बांटने का प्रबन्ध किया जाये ताकि उपस्थितजन शान्ति पाठ में शामिल हो सके।

लकडी के छोटे-छोटे टुकडे कुल एक मन। ज्यादा लकडी जलाने से कोई लाभ नही। हवन सामग्री के सात डिब्बे तथा सात किलो शर्करा, चार किलो घी।

केसरी वस्त्र क्यो?

ब्रह्मचारी के लिये आदेश है कि वह बिना सिलाई किये केसरी वस्त्र पहने, केसरी रंग चढ़ते सूर्यभगवान् का रंग, यज्ञाग्नि की शिखाओं का रंग, विवेकानन्द तथा जगद् गुरू आद्य शंकराचार्य के परिधानों का रंग, श्री कृष्ण की ध्वजा का रंग, श्री राम की ध्वजा का वर्ण, बुद्धजी के वस्त्रों तथा सिक्ख गुरूओं की ध्वजा का स्वीकृत रंग है। वेद कहता है-

''अरुणोऽरुणानां'' केतूनां प्राणै रुपसृजद्भिः।

हम केसरी ध्वजा लिये उदित सूर्य को प्राणों से प्यार करें।

दिखावे का त्याग-

कोई दिखावा न किया जाये। नाहक खर्चा बढ़ाकर संस्कार को असंभव न बनाये। मिठाइयां, चायपान, दूध वितरण, पोशाकों की भेंट, आतिशबाजियां, हद से ज्यादा बनाव सिंगार, बिजली का अपव्यय इस अध्वर यानी अहिंसक कर्म को असफल बना सकते है। प्रीतिभोज देश काल विचार करके करें। हम धर्म को, पुण्य को, प्रभु को, मन मे, धारण करें न कि दिखावे को।

हमारे वैदिक यज्ञों पर राजघरानों धनी-समृद्ध लोगों के बढपन की छाप पड़ी है। आडंबर से दूर रहें। आंडबर अधर्म को जन्म देता है और हम वैदिक शान्ति मार्ग से दूर रहते है।

संस्कार के लिये संस्कृत ज्ञान

माता-पिता अपने बालकों को संस्कृत का ज्ञान कराये। यदि स्वयं न करा सकें तो किसी संस्कृत विद्वान् के पास लेकर यज्ञोपवीत संस्कार से छः महीनों पहले प्रत्येक रविवार को संस्कृत पढ़ाई का क्रम जारी रखा जाये।

यज्ञोपवीत संस्कार के लिये उपयुक्त समय है दसवीं परीक्षा पास करने के तत्काल बाद। इस मेखला-संस्कार के बाद, 12 वर्षों तक बालक अवश्य ब्रह्मचारी रहे। इसके बाद गृहस्थ धर्म में प्रवेश करना शास्त्र सम्मत है।

विवाह के एक दिन पहले जनेऊ डालना महापाप है। हम ऐसा न करें।

सम्मिलित संस्कार

अपने बालकों के यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर अपने बान्धवों और इष्ट मित्रों को भी इस यज्ञोपवीत कार्यक्रम में सम्मिलित कर उनके बालकों को भी जनेऊ डालने का अवसर प्रदान करें। ऐसा करने से हम समाज को धार्मिक पथ पर चलने की प्रेरणा दे सकते हैं।

यज्ञ स्वयं करे

यज्ञ में हम यजमान भी ठीक प्रकार से सहायक हो सकते है। हम तिलक लगाने, मौली बान्धने, घी आहुतियां यज्ञ में स्वाहा सुनकर डालने, शान्ति पाठ पढ़ने के रूप में यह सहायता कर सकते हैं। वेद में कहा गया है कि वेदी की चार दिशाओं में चार जन बैठे। पूर्व में, पश्चिम में दक्षिण में तथा उत्तर में ब्रह्मा, ऋत्विक्, होता तथा अध्वर्यु बैठकर यज्ञ में सहायक बने। इन चार में तीन का कार्य हम स्वयं निभायें। ब्रह्मा या तन्त्रतारक किसी विद्वान् को चुन सकते है। आजकल गुरुजनों की संख्या बहुत कम हो गई है। हम यह काम स्वयं निभायें।

प्रभु हमें वैदिक धर्म को पालने की प्रवृत्ति दे दे।

जय गायत्री जय वैदिक कर्म।

निवेदक
पं० मोती लाल पुष्कर
भगवान् श्री गोपीनाथजी आश्रम
पंपोश एनक्लेव, नई दिल्ली

शिवरात्रि
16 फरवरी, 1996